उपनिषद्-सुधा बिन्दु

ॐ सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः!

(शान्ति-मन्त्र, कठोपनिषद्)

हे परमात्मन्! आप हम दोनों (गुरु-शिष्य) की रक्षा करें। आप हम दोनों को मुक्ति के परमानन्द का अनुभव करायें। हम दोनों धर्मग्रन्थों के निहितार्थों को समझने के लिए श्रम करें। हम दोनों की विद्या फलदायक हो। हम दोनों कभी भी परस्पर द्वेष न करें।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः!

ॐ

मनुष्य रोटी पर निर्भर नहीं रह सकता है; परन्तु वह भगवान् के नाम पर जीवित रह सकता है। पवित्र प्रेम एवं आत्म-भाव से देश और मानवता की निःस्वार्थ सेवा द्वारा प्राप्त भगवद्-भाव में ही वास्तविक स्वराज्य निहित है। स्वार्थपरता, लोभ, काम, अभिमान और अहंकार का उन्मूलन कर पवित्र प्रेम विकसित करें।

ह्रह्मस्वामी शिवानन्द

ब्रह्मचर्य-साधना :

कामुक दृष्टि को बन्द करें १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

एक सज्जन हैं। उन्होंने धूम्रपान और मद्यपान त्याग दिया है। वे विवाहित होते हुए भी अब ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना चाहते हैं। उनकी पत्नी को इसमें कोई आपत्ति नहीं है; किन्तु वे स्वयं इस संयम को दुस्साध्य अनुभव करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें विशेष कठिनाई चक्षुरिन्द्रिय के नियन्त्रण में है। उन्होंने हाल में मुझसे कहा थाहृहृ''गली मेरी प्रमुख शत्रु है।'' इसका अर्थ यह हुआ कि उनके नेत्र सुवेषित महिलाओं से आकर्षित होते हैं।

एक अन्य साधक कहता हैहृहृ''जब मैं प्राणायाम, जप तथा ध्यान का सशक्त रूप से अभ्यास करता था, तो अर्धनग्न युवती महिलाओं को देखने पर भी मेरा मन प्रदूषित नहीं होता था; किन्तु जब मैंने अभ्यास करना त्याग दिया, तो मैं अपने नेत्रों को नियन्त्रित नहीं कर पाता था तथा गलियों में सुवेषित महिलाओं तथा चलचित्र-गृहों के सामने चिपकाये अर्धनग्न चित्रों से मैं आकर्षित हो जाता था। समुद्र-तट तथा माल रोड मेरे शत्रु हैं।''

ब्रह्मचर्य की साधना करने वाले व्यक्तियों को मैथुनिक क्रिया को देखने के आवेग को नियन्त्रित करना चाहिए। इस प्रकार का आवेग बड़ा खतरनाक है; क्योंकि यह कुतूहल तथा काम-वासना उद्दीप्त करता है। कामनाएँ कामुक दृष्टि से विकसित होती हैं।

स्त्री की ओर देखने से उससे वार्तालाप करने की कामना उत्पन्न होगी। स्त्री के साथ वार्तालाप करने से उसको स्पर्श करने की कामना जगेगी। अन्ततः आपका मन अपवित्र हो जायेगा और आप काम के शिकार बन जायेंगे। अतः स्त्री की ओर कदापि न देखिए। स्त्री के साथ एकान्त में कभी वार्तालाप न कीजिए। किसी स्त्री के साथ परिचय न बढ़ाइए।

दृष्टि के पृष्ठभाग में स्थित भावना पर ध्यान दें

सौन्दर्यमय पदार्थ को देखने में कोई हानि नहीं है; किन्तु आपको दिव्य भाव विकसित करना होगा। आपको यह अनुभव करना होगा कि प्रत्येक वस्तु भगवान् की अभिव्यक्ति है। अपने विचारों तथा भावनाओं को शुद्ध बनाइए। शुद्धता ब्रह्म है। आप तत्त्वतः शुद्ध हैं। हे राम, आप शुद्धता के मूर्त रूप हैं। **'शुद्धोऽहम्, शुद्धोऽहम्'**हृहृ'मैं शुद्ध हूँ, मैं शुद्ध हूँ' सूत्र को मानसिक रूप से बार-बार दोहराइए तथा अपनी मूल, अद्वितीय शुद्धता की स्थिति को प्राप्त कीजिए।

यद्यपि आपकी माता अथवा बहन रूपवती हैं, सुवेषित हैं तथा आभूषणों और पुष्पों से अलंकृत हैं; पर जब आप उन्हें देखते हैं, तो आपकी दृष्टि कामुक नहीं होती। आप उन्हें स्नेह तथा शुद्ध प्रेम से देखते हैं। यह शुद्ध भावना है। यहाँ कामुक भाव नहीं है। आपको अन्य स्त्रियों को देखते समय भी ऐसा ही शुद्ध प्रेम अथवा भावना का विकास करना होगा। यदि दृष्टि

के पीछे अशुद्धता है, तो यह व्यभिचार के तुल्य है। कामातुर हृदय से स्त्री की ओर देखना यौन-सुख का भोग है। यह मैथुन का एक रूप है। इसी कारण से प्रभु यीशु कहते हैंह्न''यदि आपने किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाली, तो आप अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुके हैं।''

किसी स्त्री को देखने में कोई हानि नहीं है; परन्तु आपकी दृष्टि नितान्त पवित्र होनी चाहिए। आपमें आत्म-भाव होना चाहिए। जब आप किसी युवती महिला को देखें, तो अपने मन में ऐसा भाव लायेंह्न''हे माता, आपको साष्टांग प्रणाम! आप काली माता की प्रतिकृति अथवा अभिव्यक्ति हैं। मेरी परीक्षा न लें। मुझे प्रलोभन न दीजिए। अब मैं माया तथा उसकी सृष्टि का मर्म समझ गया हूँ। इन रूपों का किसने सृजन किया है? इन नाम-रूपों के पीछे एक सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापी तथा परम करुणाशील स्रष्टा है। यह सब सौन्दर्य क्षीयमाण तथा मिथ्या है। भगवान् ही सौन्दर्यों का सौन्दर्य है। वह अक्षीयमाण सौन्दर्य का मूर्त रूप है। वह सौन्दर्यों का मूल स्रोत है। मुझे ध्यान द्वारा इस सौन्दर्यों के सौन्दर्य का साक्षात्कार करने दें।'' जब आप कोई मोहक रूप देखें, तो आपको उस रूप के स्रष्टा के स्मरण द्वारा उसके प्रति भक्ति, श्लाघा तथा श्रद्धायुक्त विस्मय की भावनाओं का संवर्धन करना चाहिए। तब आप प्रलुब्ध नहीं होंगे। यदि आप वेदान्त के अध्येता हैं, तो विचार तथा अनुभव करेंह्नह्नप्रत्येक पदार्थ आत्मा ही है। नाम तथा रूप भ्रामक हैं। वे मायिक चित्र हैं। उनका आत्मा से पृथक् कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है।

यदि व्यक्ति को स्त्रियों को नहीं देखना चाहिए, तो प्राचीन काल के ऋषि महिलाओं को आत्मज्ञान कैसे प्रदान करते थे? वे सेवा के लिए उन्हें निरन्तर अपने साथ क्यों रखते थे?

'स्त्री के चित्र को भी न देखें'ह्नह्नयह आदेश कामुक व्यक्तियों के लिए है, जिनमें आत्म-नियन्त्रण नहीं होता। याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को आत्मज्ञान प्रदान किया। रैक्य ने अपनी सेवा के लिए राजा जानश्रुति की पुत्री को अपने पास रखा। वह नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे।

जीवन्मुक्त के नेत्र भी स्वभाववश विषयों की ओर जाते हैं; किन्तु यदि वह चाहे, तो उन्हें वहाँ से पूर्णतः हटा सकता है तथा उन्हें रिक्त-कोटर बना सकता है। जब वह किसी स्त्री को देखता है, तब वह उसे अपने से बाहर नहीं देखता है। वह समस्त विश्व को अपने अन्दर देखता है। वह अनुभव करता है कि स्त्री उसकी आत्मा है। उसमें काम-वासना नहीं होती। उसके मन में कोई कुविचार नहीं होता है। उसके प्रति उसमें यौनाकर्षण नहीं होता है। परन्तु इसके विपरीत सांसारिक व्यक्ति स्त्री को अपने से बाहर देखता है। वह अपने मन में कामुक विचार रखता है। उसमें आत्म-भाव नहीं है। वह उसके प्रति आकर्षित है। ज्ञानी तथा सांसारिक व्यक्ति की दृष्टि में यही अन्तर है। स्त्री की ओर देखने में कोई हानि नहीं है; किन्तु आपको अपने मन में दुर्विचार नहीं रखना चाहिए।

किसी रूपवती स्त्री को देखने में कोई हानि नहीं है। आप जैसे पाटल-पुष्प के सौन्दर्य की, सागर के सौन्दर्य की, तारों के सौन्दर्य की अथवा किसी अन्य प्राकृतिक दृश्य की मन में प्रशंसा करते हैं, उसी प्रकार एक किशोरी के सौन्दर्य की प्रशंसा कर सकते हैं। ऐसा

सोचें कि आपकी पत्नी का सौन्दर्य प्रकृति तथा प्रकृति के स्वामी ईश्वर का है। आप जब कोई महिला देखें, तो अपने मन से प्रश्न करेंह्न ''इस सुन्दर रूप का स्रष्टा कौन है?'' तत्काल आपके मन में विस्मय का भाव, श्लाघा का भाव तथा भक्ति का भाव उदित होगा। जब आप किसी स्त्री पर कामुक, अपवित्र दृष्टि-निक्षेप करते हैं, तभी आप पाप करते हैं। आप मन में व्यभिचार करते हैं। जब आप कामुक विचार मन में रखते हैं, तभी बन्धन तथा विपत्ति प्रवेश करते हैं।

आप महिलाओं के मुख में जो सौन्दर्य देखते हैं, वह प्रभु का सौन्दर्य है। इस रीति से आप श्लाघा का भाव रख सकते हैं। ऐसा करने में कोई हानि नहीं है।

स्त्री सौन्दर्य का प्रतीक है। वह शक्ति की प्रतीक है। वह मौन भाषा में आपसे कहती हैह्न ''मैं आदि शक्ति की प्रतिनिधि हूँ। मुझमें भगवान् के दर्शन करो। मुझमें काली माँ के दर्शन करो। मुझमें तथा मेरे माध्यम से भगवद्-साक्षात्कार करो। भगवान् की सौन्दर्य के मूर्त रूप में पूजा करो। शक्ति के मूर्त रूप में उस (भगवान्) की आराधना करो। उसकी सर्वशक्तिमत्ता को पहचानो।'' बार-बार चिन्तन कीजिए कि मुख का सौन्दर्य प्रभु का सौन्दर्य है। इससे स्त्री को देखने पर आपमें धार्मिक भाव उदित होगा। गीता के दशम अध्याय विभूतियोग का बार-बार स्वाध्याय करें।

(अनूदित)

दिव्यता में स्थित होने का उपाय

सर्वव्यापक और समयातीत होने के कारण भगवान् हर समय और हर स्थान पर हैं, सदैव अभी और यहीं हैं। वे सबके भीतर भी हैं और बाहर भी हैं। समस्त सन्त-मनीषियों ने इस मूलभूत सत्य का अनुभव प्राप्त किया है और यह सत्य व्यक्ति को मुक्त कर देता है। हमारे हितैषियों द्वारा कहे गये इन शब्दों पर गहन श्रद्धा और विश्वास के द्वारा जब यह सत्य भीतर जाग्रत हो जाता है, तब व्यक्ति वास्तव में जीवन जीना आरम्भ करता है, क्योंकि तब वह भगवान् में जीना, रहना और स्थित हो जाना आरम्भ कर देता है। जब तक व्यक्ति भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिकह्न इन तीनों स्तरों पर उस अनुभूति को प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक उसे स्वयं को दिव्यता से पूरित कर लेना चाहिए। सतत अटूट ईश्वर-चिन्तन के द्वारा तथा इस सत्य कि 'भगवान् सर्वव्यापक और शाश्वत हैं तथा अभी और यहीं हैं', की सतत अबाध जागरूकता के द्वारा; क्योंकि भगवान् सर्वव्यापक हैं, इसलिए वह यहाँ भी हैं; क्योंकि भगवान् कालातीत हैं, इसलिए अब भी हैं, इस चिन्तन के द्वारा उसे अपने तीनों स्तरों को दिव्यतापूर्ण कर लेना चाहिए।

इस सत्य को पकड़ कर रखना, भगवान् से आन्तरिक रूप से निकट होना है। वाणी के द्वारा उनका नाम-जप करें, उनकी ही चर्चा करें, उनका गुणगान करें, प्रार्थना और स्तुतियाँ गायें तथा दूसरों को सुख-शान्ति पहुँचाने वाला मृदु भाषण करें। बाह्य रूप से उन व्यक्तियों का संग करें जो आस्तिक हैं, पवित्र भक्ति-भाव से सम्पन्न हैं तथा गम्भीरतापूर्वक साधना में संलग्न हैं। सद्ग्रन्थों और आध्यात्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करें। आन्तरिक रूप से अपने हृदय के अन्तरतम में दया, करुणा, सत्यता, एकाग्रता और उदारता की भावनाएँ विकसित करें।

अत: इस प्रकार अपने-आपको अन्तर-बाह्य, दोनों ही रूपों में दिव्यता से भर लें। पूर्णतया और समग्रता से अपने आन्तरिक और बाह्य जीवन, दोनों ईश्वरोन्मुखी हो कर व्यतीत करें। दिव्यता में विकसित होने तथा दिव्यता की अनुभूति प्राप्त करके अन्तत: दिव्यता में स्थित होने का यही उपाय है।

स्वामी चिदानन्द

भगवान् के लिए जीना ही जीवन है

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

परम सत्य रूपी निधि से महान् अन्य कोई निधि नहीं है। जो अपने जीवन में परमात्मा के साथ जागरूकतापूर्वक सम्बन्ध जोड़े हुए है, उसी का जीवन सच्चे अर्थों में समृद्ध जीवन है। जो जीवन इस सम्बन्ध से रहित है, वह निर्धन ही है, भले ही वह लौकिक धन के अम्बार में लोट रहा हो, भले ही वह अत्यधिक विद्या, बुद्धि और ज्ञान-सम्पन्न होने से सर्वोच्च प्रशंसा प्राप्त करके आनन्दोत्सव मनाता हो। किन्तु 'व्यक्ति यदि संसार-भर का लाभ प्राप्त करके अपनी निज आत्मा को गँवा दे, तो उसका लाभ क्या है?' इस प्रकार इन शब्दों द्वारा हमें महान् सत्य बताया गया है।

तब फिर एक सच्चा जिज्ञासु साधक किस प्रकार इस निधि को प्राप्त कर सकता है? हम कैसे सुनिश्चित हों कि हम इस महान् आन्तरिक आत्म-धन से वंचित नहीं हैं? हमें कैसे यह निश्चय हो कि हमारा जीवन इससे रिक्त नहीं है, प्रत्युत इससे आशीर्वादित है?

इसका उत्तर है कि हमें अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के द्वारा प्रयत्न करना पड़ेगा कि हम इसे प्राप्त करें, इससे सम्पन्न हो जायें, इसे हृदय में सँजोये रखें और इसके द्वारा धन्य हो जायें। हमारे व्यक्तित्व का कोई भी अंश किसी भी विपरीत दिशा में जाने न दिया जाये। हमारे व्यक्तित्व के कोई एक भी हिस्से के द्वारा 'उसके' अतिरिक्त अन्य किसी भी रुचि अथवा इच्छा को पनपने न दिया जाये। आपको 'उसके' लिए अनुनय-विनय करनी चाहिए, याचना करनी चाहिए, माँगना चाहिए, प्रार्थना करनी चाहिएह्न ''मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व आपमें निवास करे! मेरा कोई भी हिस्सा, थोड़ी-सी देर के लिए भी आपसे परे न हटे, पूर्णतया आपकी ओर ही सदा-सर्वदा निर्देशित रहे!''

इसके लिए ही यह जीवन दिया गया है, इसी के लिए आपको मनुष्य का दुर्लभ जन्म प्रदान किया गया है कि यह पूर्णरूपेण उस एक सर्वोच्च कार्य के प्रति समर्पित कर दिया जाये, जिसे करने पर आपका जीवन जीने के योग्य कहलाता है। जब आप परमात्मा में निवास करने लगते हैं, तभी आप वास्तव में जीवन जीते हैं। जब आप उनके प्रति जागरूकता की अवस्था में निरन्तर रहते हैं, तभी आप जीते हैं। जब आप इस तथ्य के प्रति जाग्रत और जागरूक हैं कि उन परमात्मा में ही आप जी रहे हैं, चल-फिर रहे हैं और अपने अस्तित्व को बनाये हुए हैं, केवल तब ही आप वास्तव में जीते हैं।

''मैं उन परमात्मा में निवास करता हूँ। वह परमात्मा मेरे भीतर विद्यमान हैं। मेरा जीवन इसके लिए ही है। मैं इसमें इसलिए जी रहा हूँ कि मैं स्वयं को पूर्ण रूप से, समग्र रूप से उन्हें अर्पित कर सकूँ जो मेरे अपने हैं।'' इस प्रकार सचेतनतापूर्वक जागरूक रहना और स्वयं को समग्रतापूर्वक उन एकमेव अद्वितीय सत्ता को समर्पित करने में सतर्कतापूर्वक संलग्न रहना महानतम सौभाग्य है, आपका अहोभाग्य है!

इससे बढ़ कर श्रेष्ठ अन्य कुछ नहीं है। भगवान् का स्मरण करना; विचार, विवेक, विश्लेषण और उच्चाकांक्षा द्वारा सदैव उन्हीं की ओर अग्रसर होने में संलग्न रहना, उनके साथ एकत्व की गहन भावना सँजोये रखनाह्नह्नसंक्षेप में, अपने जीवन की समस्त गतिविधियों और अभिव्यक्तियों का केवल एक ही लक्ष्य, एक ही उद्देश्य कि वह भगवान् से ही परिपूरित और निर्देशित होंह्नह्नयही आदर्श हमारे सामने हमारे श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने अपनी शक्तिशाली ओजस्वी वाणी द्वारा रखा।

ऐसा जीवन, दिव्य जीवन कहलाता है, क्योंकि यह दिव्यताभिमुखी हैह्नह्नदिव्यता में निवास करना, सर्वत्र दिव्यता निहारना, सब वस्तु-पदार्थों में, हर समय, हर क्रिया-कलाप में उसी दिव्यता से ओत-प्रोत रहना, हर समय उनके प्रति जागरूक रहना। क्योंकि केवल एकमेव उन्हीं का तो अस्तित्व है, अन्य सब-कुछ मोह-भ्रम है, भ्रान्ति है, स्व-रचित मति-भ्रम है और अस्तित्वहीन स्वप्न-चित्र है। केवल मात्र एकमेव परमात्मा ही ठोस वास्तविकता हैं जो कि आपके सर्वेसर्वा हैं। आपके आदि, मध्य और अन्त, आपके मूल स्रोत, आपके आश्रय और परम परिपूर्णता वही हैं।

उन्हीं के लिए हम जियें। हम दिव्य जीवन जियें। दिव्यता हमारे व्यक्तित्व के कण-कण में भर जाये। हमारा हर श्वास, हरेक गतिविधि, प्रत्येक कदम दिव्यता से ओत-प्रोत हो जाये, हम दिव्यता से परिपूरित और दिव्यता से परिव्याप्त जीवन ही जियें, क्योंकि केवल वैसा जीवन ही वास्तविक जीवन है। परमात्मा सर्वोच्च सत्य हैं। उनके लिए जीना ही जीवन है। अन्य सब-कुछ जीवन के विपरीत है, सब-कुछ थोथा है, उनका कुछ भी मूल्य नहीं है, कुछ भी अर्थ या सार नहीं है।

हम इसे जानें तथा अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ प्रतिक्षण भगवान् की ओर आगे बढ़ें। यही वास्तव में परम धन्यता है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

अवतार

विष्णु के अनेक अवतार हैं। श्रीमद्भागवत में कम-से-कम बाईस अवतारों के नामों का उल्लेख है। इनमें दश अवतार मुख्य हैं, जिन्हें 'दशावतार' कहते हैं। जैसा कि भगवद्गीता में भगवान् ने घोषणा की है कि जब-जब धर्म की अवनति होती है, तब-तब सज्जनों की रक्षा करने तथा दुष्टों का विनाश करने के लिए वे धरती पर अवतरित होते हैं। समय और अवसर के अनुकूल रूपों में अवतरित हो कर वे न्याय और सत्य की संस्थापना करते हैं। कुछ अवतार 'पूर्णावतार' (दैवत्व की पूर्ण अभिव्यक्ति) कहलाते हैं; कुछ को 'अंशावतार' या 'कलावतार' (दैवत्व की आंशिक अभिव्यक्ति) कहते हैं। भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण 'पूर्णावतार' अर्थात् ईश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति थे।

स्वामी कृष्णानन्द

भगवद्गीता २

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

ईश्वर का अवतार

जब-जब धर्म की अवनति और अधर्म की उन्नति होती है, तब-तब दुष्टों का नाश करने, सज्जनों की रक्षा करने तथा न्याय (धर्म) की स्थापना करने के लिए ईश्वर धरती पर अवतार लेता है। धर्म-दर्शन में अवतारवाद विवाद का विषय रहा है। इसी प्रकार ईश्वर-मीमांसा (Theology) के क्षेत्र में भी विचारक अवतारवाद को एक जटिल प्रश्न मानते रहे हैं। मानव-मन को तत्त्व-मीमांसा की दृष्टि से संसार में आध्यात्मिक शक्तियों की गति का दिव्य रहस्य समझ पाना कठिन है। जब भी कोई समाधान खोजने का प्रयत्न किया जाता है, ईश्वर का अवतरण हो जाता है मानो मनुष्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए की गयी पुकार का यह ईश्वर की ओर से दिया गया उत्तर हो।

सापेक्ष (जीव) और निरपेक्ष (परम तत्त्व) के बीच एक आन्तरिक अविच्छेद्य सम्बन्ध है। जब केन्द्रापसारी (Centrifugal) मानसिक ऊर्जाह्वह्वजो समस्त सृष्टि को सम्बोधित भगवान् के संघटित करने वाले, केन्द्राभिमुखी (Centripetal) आवाहन का विरोध करती प्रतीत होती हैह्वह्वके द्वारा इस सम्बन्ध का सामंजस्य समाप्त होने लगता है, तब सत्य की शक्ति सापेक्ष जगत् में प्रवेश करने के लिए विवश हो जाती है। इसी शक्ति के प्रभाव के कारण ही ईश्वर का अवतार होता है। अवतार के रूप में ईश्वर का अवरोहण इस उद्देश्य से होता है कि जीव का अपने दिव्य आवास की ओर आरोहण हो सके।

जिस प्रकार शरीर के अन्दर स्वास्थ्य-प्रदायक शक्तियाँ रोग-उत्पादक जीव-विषों (Toxins) से सतत संघर्ष करती रहती हैं, उसी प्रकार परम तत्त्व की ब्रह्माण्ड-व्यापक सन्तुलित करने वाली शक्ति एक दोष-निवारक तत्त्व के रूप में विध्वसंकारी शक्तियों के बीच उन पर नियन्त्रण प्राप्त करने के लिए प्रवेश कर जाती है। अवतार ईश्वर की एक सतत क्रिया है। वह (ईश्वर) इस जगत् के जीवन की प्रत्येक नाजुक स्थिति और संकट-काल (युगे-युगे) में अपने को व्यक्त कर देता है। ईश्वर का अवतार इस तथ्य का स्मरण कराता रहता है कि आसुरी शक्तियाँ सृष्टि में व्याप्त देवत्व तथा सारभूत अच्छाइयों पर विजय नहीं प्राप्त कर सकतीं।

सम्यक् कर्म का रहस्य

भगवद्गीता कर्मयोग (सम्यक् कर्म का विज्ञान) पर एक शास्त्रीय प्रबन्ध है। कृष्ण अर्जुन को सुख-दुःख, सफलता-विफलता को समान मानते हुए कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। भगवान् कृष्ण के अनुसार सम्यक् कर्म के सम्पादन का उद्देश्य उसका फल प्राप्त करना नहीं, वरन् ब्रह्माण्ड के नियमों के साथ सहयोग करना होता है। सम्यक् कर्म का पुण्य-फल कभी नष्ट नहीं होता। एक छोटा-सा भी

न्याय-संगत अथवा धर्म्य-कर्म मानव को जीवन के बन्धन में पड़ने से बचा सकता है। ब्रह्माण्ड-व्यापी आत्मा (ईश्वर) में अपनी चेतनता को प्रतिष्ठित करके चिन्ता-मुक्त होने पर विचारों में पवित्रता आती है। इस पवित्रता में अपने को केन्द्रित करके उपर्युक्त उद्देश्य से सुख-दुःख, जय-पराजय आदि द्वन्द्वों से अप्रभावित रहते हुए कर्म करना चाहिए।

व्यक्ति का कर्तव्य केवल कर्म करना है, कर्म-फल की आशा नहीं। सम्यक् कर्म करने का रहस्य यह है कि न तो कर्म-फल में आसक्ति होती है और न कर्म-त्याग की प्रवृत्ति होती है। परन्तु कर्म-फल के प्रति आसक्ति न रखने का अर्थ यह नहीं है कि कर्म-सम्पादन के प्रति असावधानी का भाव रहे तथा कर्म के मूल उद्देश्यों का ही विस्मरण हो जाये, अन्यथा यह भी स्वार्थपरता का ही एक रूप होगा। कर्मयोग का अर्थ हैह्नह्नमानसिक सन्तुलन तथा कर्म-निष्पादन की कुशलता। कर्म का यह विज्ञान कहीं व्यवहार-कुशलता (दुनियाँदारी) या आचरण की चतुरता ही बन कर न रह जाये, इसलिए कृष्ण ने यह भी कहा है कि कर्म-सम्पादन के पीछे कोई परोक्ष या गूढ़ उद्देश्य नहीं होना चाहिए तथा योग की भावभूमि पर रह कर ही कर्म किये जाने चाहिए। योग का अर्थ हैह्नह्नसम-चित्त रहते हुए भागवती-चेतना में संस्थित रहना।

कर्म न करने का प्रयत्न करने से लाभ ही क्या है? एक क्षण को भी कोई बिना कर्म किये नहीं रह सकता; क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति (जिसका स्वभाव ही अस्तित्व के उच्चतर स्तरों में अधिकाधिक विकसित होने के लिए प्रयत्नशील रहना है) द्वारा कर्म की ओर धकेल दिया जाता है। जब कि मन और इन्द्रियाँ अपने विषयों की खोज में सतत प्रयत्नशील रहती हैं, तब शरीर को कर्महीनता (निष्क्रियता) की स्थिति में रखने का क्या अर्थ है? मन और इन्द्रियों को पूर्ण नियन्त्रण में रखते हुए विश्व-परिपाटी के अनुकूल बाह्य कर्मों को करते रहना चाहिए। कर्म करने का उद्देश्य किसी स्वार्थ की पूर्ति नहीं, वरन् सृष्टि के क्रिया-कलाप में सहयोग देना होता है। समाज सहयोग की ही आधारभूमि पर स्थित है। शरीर भी अंगों के पारस्परिक सहयोग के बिना क्रियाशील नहीं रह सकता। संसार पारस्परिक सहयोग का मूर्त रूप है। सौर तथा तारकीय जगत् भी सहयोग पर ही आधारित रहते हैं। अपने समस्त अंगों समेत इस ब्रह्माण्ड में सहयोग की एक सर्वतोमुखी प्रक्रिया का ही दृश्य दिखलायी पड़ रहा है। ब्रह्माण्ड-व्यापी शासन की इस अद्‌भुत प्रणाली (व्यवस्था) का अर्थ तब समझ में आता है, जब हम 'पुरुषसूक्त' में वर्णित विराट् पुरुष या ईश्वर अथवा गीता के विश्वरूप-दर्शन पर मनन करते हैं।

जो व्यक्ति आत्मरत तथा आत्म-सन्तुष्ट है, केवल उसी के ऊपर कर्म करने का कोई उत्तरदायित्व नहीं है। उसके लिए कुछ भी उपलब्ध करना शेष नहीं रह जाता। वह कुछ करता है या नहीं, इसका कोई महत्त्व नहीं है, क्योंकि वह जगत् की किसी भी वस्तु पर किसी भी प्रकार से निर्भर नहीं रहता। गीता में वर्णित कर्म न करने की यह असाधारण स्थिति अकर्मण्य रहने की छूट नहीं है। आत्मज्ञानी की तथाकथित कर्महीनता की यह स्थिति कर्म का एक सर्वोच्च रूप है। उसकी यह विशेषता बड़ी महत्त्वपूर्ण

है कि वह किसी भी वस्तु पर किसी भी प्रकार से निर्भर नहीं होता।

सामान्य प्राणियों को संसार की किसी-न-किसी वस्तु पर निर्भर रहना ही पड़ता है। जीवित रहने के लिए उसे समाज पर, सामयिक सहायता प्राप्त करने के लिए अपने सम्बन्धियों पर, अपनी सुरक्षा के लिए सरकार पर और अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए प्रकृति की उदारता पर निर्भर रहना पड़ता है। आत्मरत व्यक्ति की चेतना (Consciousness) मनोगम्य शारीरिक स्थिति नहीं है। उसकी वैयक्तिकता ब्रह्माण्ड-व्यापी विराट् पुरुष में एकाकार हो जाती है। ब्रह्माण्ड-व्यापी चेतना के स्तर पर कर्म का कोई अर्थ नहीं रह जाता। परन्तु जो यह समझता है कि उसका अस्तित्व संसार में है, उसके लिए कर्म न करने की छूट नहीं है।

कर्म करने की विधि में ही कर्म-निष्पादन का कौशल छिपा हुआ है। इस विधि के अनुसार बुद्धिमान् पुरुष बाह्य रूप से ही कर्म से अपने को सम्बद्ध रखता है। आन्तरिक रूप से उसे उस कर्म में आसक्त नहीं होना चाहिए, जब कि अज्ञानी व्यक्ति उसमें आसक्त होता है। बुद्धिमान् व्यक्ति को अज्ञानी के त्रुटिपूर्ण कार्यों की निन्दा भी नहीं करनी चाहिए; क्योंकि इस निन्दा से उसको (अज्ञानी को) किसी प्रकार की शिक्षा नहीं मिलती। उलटे वह हतोत्साहित हो जाता है तथा उसका जीवन रसहीन बन जाता है। बुद्धिमान् व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अज्ञानी को प्रोत्साहन दे तथा उसकी आस्थाओं पर चोट न करे; क्योंकि शैक्षिक प्रक्रिया में समझ के निचले स्तर से ऊपर की ओर उठा जाता है। इस प्रक्रिया में विचार ऊपर से नहीं थोपे जाते। सम्यक् कर्म का मूल भाव स्वार्थपरता से नष्ट हो जाता है। यह स्वार्थपरता क्षोभ, क्रोध और लालच के रूपों में प्रकट होती है। इन मनोवैज्ञानिक रोगों से मुक्ति ही वास्तविक आध्यात्मिक स्वास्थ्य है।

वास्तविक कर्म शारीरिक क्रिया नहीं है। यह है कामना-जनित संकल्प-व्यापार। जो इससे मुक्त है, वह कोई कर्म नहीं कर करता, यद्यपि ऊपरी तौर से ऐसा प्रतीत होता है कि वह कार्यरत है। जो कर्म भागवती-चेतना-रूपी यज्ञ में वैयक्तिकता की आहुति दे देता है, वह नष्ट हो जाता है और कर्ता के बन्धन का कारण नहीं बनता। जब साधक को जीवों की विविधता के मूल में एकमात्र परम तत्त्व ही दृष्टिगोचर होने लगता है, तब वह उसी तत्त्व में लीन हो जाता है।

(अनूदित)

आनन्द का स्रोत अन्तरात्मा में ही है

कस्तूरी मृग को यह ज्ञान नहीं होता कि सुगन्धि उसी की नाभि से उद्भूत हो रही है। वह इस सुगन्धि के मूल स्थान का पता लगाने के लिए इधर-उधर भटकता फिरता है। इसी भाँति मोहाक्रान्त नासमझ मानव को यह ज्ञात नहीं कि आनन्द का स्रोत उसी के अन्दर उसकी अन्तरात्मा में ही है। वह आनन्द-प्राप्ति की खोज में विनाशशील बाह्य पदार्थों के पीछे दौड़ता रहता है।

स्वामी शिवानन्द

सेवा-दर्शन १

स्वामी रामराज्यम्

कुछ समय पूर्व हमने द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के स्थापना-दिवस (११ जनवरी १९३६ ई.) की सुखद स्मृति में अति उत्साहपूर्वक अमृत महोत्सव का आयोजन किया था। स्थापना-दिवस के पूर्व-काल से ही इस संस्था के जन्मदाता परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज द्वारा भगवत्कृपा के सहारे भगवत्प्रीत्यर्थ संसार के रूप में प्रकटित भगवान् की अनेकानेक प्रकार से सेवा की जाती रही है। आइए, इस लेख को पढ़ कर हम सेवा-दर्शन की गहराइयों में उतरें और तदनुरूप सेवा-कार्य करते हुए भगवदर्थ की जाने वाली इस सेवा के प्रवाह की अक्षुण्णता और निरन्तरता को बनाये रखने में अपना योगदान दें।

आध्यात्मिक साधना के शब्दकोश में सेवा एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। सेवा के बिना साधना अधूरी है। ज्ञानी, कर्मयोगी तथा भक्त के लिए सेवा का स्वरूप तथा उसकी अवधारणा भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, परन्तु किसी-न-किसी रूप में तीनों ही सेवा से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहते हैं।

सेवा की आधार-भूमि

परमात्मा-प्राप्ति का लक्ष्य हो, तभी वास्तविक सेवा की जा सकती है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह बोध होना आवश्यक है कि असीम परमात्मा की प्राप्ति के लिए असीम भाव रखना होगा। जब तक हम शरीर तथा अपने कहे जाने वाले पदार्थों को अपने और अपनों के हित में इस्तेमाल करते हैं तथा यह मानते हैं कि अपना हित दूसरों के हित से अलग है, तब तक हम ससीमता के भाव से ग्रस्त रहते हैं। दूसरों के हित तथा अपने हित के बीच की विभाजन रेखा समाप्त करके जब हम अपने शरीर तथा पदार्थों को दूसरों के हित में इस्तेमाल करते हैंह्वह्वइसी को सेवा कहते हैं, तब असीमता का भाव आ जाता है।

ससीमता के भाव से मुक्त हो कर संसार से सम्बन्ध टूट जाता है और परमात्मा-प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। साधन, भजन और सेवा का पाथेय ले कर इस मार्ग पर चलने वाला पथिक परमात्मा-प्राप्ति के गन्तव्य तक पहुँच जाता है।

यह है सेवा की आधार-भूमि।

सेवा के पक्ष

सेवा के दो पक्ष हैंह्वह्व१. भावपक्ष २. क्रियापक्ष।

भावपक्ष : सेवा का मुख्य भाव है दूसरों को सुख पहुँचाना अर्थात् अधिक से अधिक को अधिक से अधिक सुख पहुँचाना (maximum good of the maximum number)। 'दूसरों' शब्द के अन्तर्गत परिचित-अपरिचित, सज्जन-दुर्जनह्वह्वसभी का समावेश हो जाता है।

भले ही हम दूसरों को अधिक से अधिक सुख न पहुँचा पायें, परन्तु यह भाव बना रहना चाहिए। भाव बनाने में हम स्वतन्त्र हैं। दूसरों को सुख पहुँचाने में हमारी स्वतन्त्रता सीमित है क्योंकि भगवान् की इच्छा से ही हम दूसरों को सुख पहुँचा सकते हैं। भाव बनाने की स्वतन्त्रता का पूरा-पूरा उपयोग किया जाना चाहिए। इस भाव से भी सेवा हो जाती है, भले ही सेवा के साधन सीमित मात्रा/संख्या में हों।

सेवा का एक अन्य महत्त्वपूर्ण भाव हैह्वह्वदूसरों का दुःख देख कर दुःखी होने तथा दूसरों का सुख देख कर सुखी होने का भाव। यह भाव रखने से दुःखी व्यक्तियों का मनोबल बढ़ेगा और जो सुखी हैं, उनको भी अच्छा लगेगा। दूसरों के दुःख में दुःखी होने का अर्थ रोना-धोना नहीं है। इसका अर्थ है दूसरों का दुःख दूर करने की यथासम्भव चेष्टा करना। दूसरों का दुःख दूर करना हमारे वश की बात नहीं है परन्तु उसे दूर करने के उद्देश्य से अपनी क्षमता और साधनों का मनोयोगपूर्वक उपयोग करना हमारे वश की बात है। जितना हमारे वश में हो, उतना अवश्य करना चाहिए, करते रहना चाहिए।

सेवा के भावपक्ष के प्रति जागरूकता बनाये रखने से सेवा सहज और सम्यक् (सेवा-कर्म के अभिमान और स्वेच्छा से रहित) हो जाती है।

□

तीन प्रकार की तपस्याओं का अभ्यास कीजिए

अपने मन, वचन एवं कर्म से अहिंसा तथा ब्रह्मचर्य का पालन कीजिए। शौच तथा आर्जव का अभ्यास कीजिए। समत्व-बुद्धि रखने का प्रयास कीजिए। सदा प्रफुल्लित रहिए। शुद्ध भाव रखिए। इन तीन प्रकार की तपस्याओं (वाचिक, मानसिक तथा शारीरिक) का अभ्यास कीजिए तथा अपने कार्यों पर पूरा नियन्त्रण रखिए।

अपनी वाणी में सावधान रहिए। थोड़ा बोलिए। प्रिय तथा मधुर शब्द बोलिए। कटु शब्द कभी न बोलिए। ऐसा शब्द कभी न बोलिए, जिससे दूसरों की भावनाओं को चोट पहुँचे। सत्य बोलने का प्रयत्न कीजिए। आप अपनी वाक्-इन्द्रिय पर पूरा नियन्त्रण रखें।

बुरे विचार ज्यों-ही मन के किले में घुसने का प्रयास करें, त्यों-ही विवेक के खड्ग से उन्हें मार डालिए। इस प्रकार आप सुन्दर चरित्र का निर्माण कर सकते हैं।

स्वामी शिवानन्द

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

सामान्य ज्ञान-१

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

साधु कौन है?

साधु सज्जन होते हैं। उन्हें इस संसार के प्रति मोह नहीं रहता। वे जहाँ भी चाहेंह्वह्वसंसार अथवा जंगल मेंह्वह्वरह सकते हैं। जितने से वे जिन्दा रह सकें उतना खाना उन्हें मिल जाये, बस वही उनके लिए काफी है। उनकी पोशाक सादी होती है। उनका अपना कोई परिवार नहीं होता, न बाल-बच्चे होते हैं और न सम्पत्ति ही। फिर भी वे परम सुखी होते हैं।

साधु ज्ञानी और सद्गुणी होते हैं। दया, विश्व-प्रेम, सत्यनिष्ठा, पवित्रता आदि सभी दिव्य गुण उनमें होते हैं। वे अपने मन और इन्द्रियों पर काबू पा लेते हैं।

साधुओं में क्रोध, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या आदि दोष नहीं रहते। वे सबसे प्रेम करते हैं। वे सदा भजन और ध्यान करते हैं। वे कभी किसी को दुःख नहीं देते। लोग उनका सम्मान करते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

प्राचीन ऋषि

ऋषि महान् आत्मा होते हैं। ऋषि साक्षात् ईश्वर हैं। व्यास, वसिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकिह्वह्वये सब महान् ऋषि हैं। व्यास ब्रह्मर्षि हैं। जनक राजर्षि हैं। व्यास ने अठारह पुराण लिखे। वाल्मीकि ने रामायण लिखी। कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, वसिष्ठ और जमदग्निह्वह्वये सप्तर्षि हैं। रात्रि के समय आकाश में सप्तर्षि-मण्डल दिखायी देता है।

इन ऋषियों को प्रतिदिन प्रणाम करो। बोलोह्वह्व ॐ नमः परम ऋषिभ्यो नमः परम ऋषिभ्यः।'' वे तुम्हें आशीर्वाद देंगे।

पंच-तत्त्व

ईश्वर ने पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश इन पाँच तत्त्वों का निर्माण किया। तुम्हारा शरीर भी इन पाँच तत्त्वों से बना है। प्रत्येक तत्त्व का स्वामी एक देवता होता है।

मानव-शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैंह्वह्व कान, त्वचा, आँख, जीभ और नाक। कान शब्द सुनते हैं। त्वचा शीत-उष्ण का अनुभव करती है। आँख रूप और रंग देखती है। जीभ स्वाद चखती है। नाक गन्ध सूँघती है।

पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी हैं। वे हैं हाथ, पैर, वाणी, गुदा तथा जननेन्द्रिय। इन सभी इन्द्रियों का स्वामी मन है। यह ग्यारहवीं इन्द्रिय है। मन से परे अमर आनन्दमय आत्मा है। वह अन्तर्यामी है।

हिन्दू-धर्म

हिन्दू-धर्म हिन्दुओं का धर्म है। भारत के ऋषि-मुनियों ने इस धर्म की स्थापना की। हिन्दुओं

का पवित्र ग्रन्थ वेद है। हिन्दू-धर्म कहता है‘‘भले बनो। भला करो। ईश्वर और मनुष्य के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करो। शुद्ध रहो। सादा रहो। ईश्वर की पूजा करो। उसकी शरण में जाओ। किसी से घृणा मत करो। सभी प्राणी ईश्वर के ही रूप हैं। सत्य बोलो। किसी प्राणी की मन, वाणी और कर्म से हिंसा न करो।’’

वेद चार हैं। पुराण अठारह हैं। व्यास मुनि ने अठारह पुराण, चार वेद और महाभारत की रचना की। महाभारत पाँचवाँ वेद माना जाता है। रामायण, भागवत और भगवद्गीता हिन्दुओं के अत्यन्त प्रिय ग्रन्थ हैं।

हिन्दू ईश्वर की पूजा करते हैं। वे भगवान् राम, कृष्ण, शिव या देवी की पूजा करते हैं। वे रोज मन्दिर जाते हैं और पूजा करते हैं।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

बाल-स्तम्भ :

कौन कहता है भगवान् नहीं हैं १

स्वामी रामराज्यम्

बच्चो, भगवान् की सत्ता में तुम्हारी आस्था उत्पन्न करने और उसे दृढ़ करने के उद्देश्य से हम एक सच्ची घटना प्रस्तुत कर रहे हैं।

जीजी माँ

एक थीं जीजी माँ। जीजी माँ के घर में ही युगल सरकार (भगवान् कृष्ण और श्रीराधा जी) का मन्दिर था। वह बहुत प्रेमपूर्वक नियमित रूप से उनकी पूजा किया करती थीं। वह भगवान् कृष्ण को अपना पुत्र और राधा जी को अपनी पुत्रवधू मानती थीं। यह सम्बन्ध इतना प्रगाढ़ हो गया था कि आये दिन युगल सरकार उनके सामने आ कर खड़े हो जाते थे।

एक बार गरमी के मौसम में जीजी माँ वृन्दावन जाने को तैयार हुईं। अपनी अनुपस्थिति में घर के मन्दिर में पूजा करवाने के लिए उन्होंने एक पण्डित जी को बुलाया, उन्हें पूजा करने के बारे में सारे निर्देश दिये और पूजा का भार उन्हें सौंप कर टैक्सी पर सवार होने के लिए वह घर से बाहर निकलीं। तभी उनका रास्ता रोक कर युगल सरकार खड़े हो गये। कहने लगेह्न ''जीजी माँ, हमें भी वृन्दावन ले चलो। हमें तो तुम्हारे ही हाथ की पूजा अच्छी लगती है।'' आगे बढ़ते हुए जीजी माँ के पैर ठिठक गये। वह वापस घर लौटीं। उन्होंने युगल सरकार को स्नान कराया, उन्हें नयी पोशाक पहनायी और नये आभूषण पहनाये। फिर चाँदी के एक छोटे-से बक्से में सोने का सिंहासन रखा। उस पर रेशमी बिछावन लगा कर युगल सरकार को उस पर पधरा दिया। टैक्सी की पिछली सीट पर वह बैठीं और उनके युगल सरकार भी बैठे खुले हुए बक्स के अन्दर, सिंहासन पर उन्हीं के पास। टैक्सी चल पड़ी। थोड़ी देर बाद जीजी माँ को नींद आ गयी। न जाने कब बक्स का ढक्कन बन्द हो गया। जीजी माँ को पता ही नहीं चल पाया। बक्स के अन्दर युगल सरकार को गरमी लगने लगी। पसीना निकलने लगा। पसीना बह कर बाहर निकला और जीजी माँ की धोती उससे गीली होने लगी। जीजी माँ चौंक कर जाग पड़ीं। देखा कि धोती ही गीली नहीं थी, सीट का एक हिस्सा भी गीला हो गया था। उन्होंने टैक्सी रुकवायी। बन्द बक्स को खोल कर देखाह्न पूरा बिछावन गीला हो गया था, युगल सरकार तो पसीने से तर-बतर थे ही । जीजी माँ रोते हुए बोलींह्न 'हाय, मैं क्यों सो गयी?' उन्होंने टैक्सी रुकवायी, युगल सरकार का बिछावन बदला, पोशाक बदली। टैक्सी के सरदार जी ड्राइवर ने यह दृश्य देखा तो भावुक हो कर रो पड़े। उन्होंने जल्दी से अपनी पगड़ी खोली और सीट तथा जीजी माँ की धोती में लगे हुए पसीने को अपनी पगड़ी से पोंछ लिया।

टैक्सी वृन्दावन पहुँची। जीजी माँ सरदार जी को किराया देने लगीं। वह बोलेह्न ''मुझे क्या नहीं मिल गया। मुझे जन्म-जन्म की कमाई मिल गयी।'' यह कह कर पसीने से भीगी अपनी पगड़ी को वह बार-बार माथे से लगाने लगे।

जीजी माँ भाव विभोर हो कर कुछ देर तक युगल सरकार को देखती रहीं। फिर उनके चरणों पर झुक कर सिसकने लगीं। □

मानवीय परिस्थिति में भगवान् ही विद्यमान हैं

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उस परम सत्ता को, परम पिता परमात्मा को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हैं जो यहाँ, इस समय पावन समाधि-स्थान में गुरुदेव की दिव्य उपस्थिति में विद्यमान हैं। यहाँ गुरुदेव की दिव्य उपस्थिति इसलिए है, क्योंकि इस आधुनिक जगत् में आध्यात्मिक पुनर्जागरण लाने के लिए जिस नश्वर देह का उन्होंने उपयोग किया था, वह यहाँ इस स्थान पर समुचित सम्मानपूर्वक समाधिस्थ किया गया है। परमात्मा की विद्यमानता यहाँ इसलिए है, क्योंकि वह सब स्थानों पर कण-कण में विद्यमान हैं और साथ ही वह पूर्णतया सापेक्ष और वैयक्तिक हैं। इसकी लोकातीतता, सर्वव्यापकता और अन्तर्निहित विद्यमानता को आध्यात्मिक जगत् की महान् विभूतियों ने अनुभूत करके उद्घोषित किया है।

अतः हम इस प्रकार द्विविध विद्यमानता में हैंह्वह्व एक-साथ आध्यात्मिक और दिव्य। यह इस सन्दर्भ में है कि हमें देखना होगा कि आध्यात्मिक विकास तथा प्राप्ति का ढंग तथा साथ ही हमारी मानवीय दशा का हलह्वह्वदोनों ही इस सत्य में आ जाते हैं। एक ढंग बता दिया जाता है : इस सत्य के प्रति जागरूकता बनाये रखें, तब फिर आप कहीं भी हों, आपकी अनुभूति सदा ईश्वरीय-अनुभूति बनी रहेगी। आप कहीं भी हों, किसी भी स्थिति में हों, आप साथ-ही-साथ यह जानते होंगे कि आप भगवान् की उपस्थिति में हैं।

इस प्रकार इस उपस्थिति को अनुभव करने का अभ्यास आपके लिए ईश्वरीय जागरूकता में विकसित होने का ढंग बन जाता है, जो कि अन्ततः आपको ईश्वरीय अनुभूति की पराकाष्ठा पर पहुँचा देगा। इसके साथ ही यह सत्य हमारी मानवीय दुर्दशा का हल भी प्रस्तुत करता है। मानव की समस्या यह है कि जिस स्थान को भगवान् ने सबसे उत्तम स्थान बनाया थाह्वह्वभगवान् के साथ निरन्तर सम्बन्ध बनाये रखने के लिएह्वह्वमानव का आन्तरिक आध्यात्मिक हृदयह्वह्व उसका अन्तःकरणह्वह्ववह प्रायः इस परिवर्तनशील संसार के भिन्न-भिन्न विविध सोच-विचारों द्वारा घिरा रहता है। जिन महा-जनों ने स्वयं को सर्वातीत की अनुभूति में स्थित कर लिया है, उन्होंने हमें बताया हैह्वह्व''स्वयं को दुःखी न होने दें। इन सब बाह्य आकर्षणों और बाह्य तत्त्वों के मध्य में यह केन्द्रीय बिन्दु है जहाँ सदा विद्यमान, सदा समान भाव में अपरिवर्तनीय दिव्यता उपस्थित है। समस्त विक्षेपों के बीच, सभी तूफानों के मध्य, विविध विचारों के अन्तर्गत यह बिलकुल केन्द्र स्थल में अविजेय निवास करती है।''

इस अकाट्य सत्य से दृढ़तापूर्वक चिपके रहना होगा, अपने भीतर स्थित इस सत्ता के प्रति, इस सत्य की उपस्थिति के प्रति जागरूक रहने का हर साँस के साथ अभ्यास करना होगा। तब फिर संसार में रहते हुए भी आप भगवान् में निवास करेंगे। तब फिर सदा परिवर्तनशील परिस्थितियों और अनुभवों (जो कि इस लौकिक जीवन का एक अनिवार्य अंग हैं) के मध्य में

रहते हुए भी, यह सदा अपरिवर्तनीय, अप्रभावनीय सत्य की हमारे भीतर उपस्थिति बनी रहेगी।

इस पर नित्य मनन करना, नित्य-निरन्तर मनन करते रहनाह्नह्नयह हमारी आध्यात्मिक साधना का और आध्यात्मिक जीवन का सार है तथा इस जागरूकता में सत्संग द्वारा, स्वाध्याय द्वारा और इस स्मरण द्वारा सहायता मिलती हैह्नह्न''मैं आपमें निवास करता हूँ, आप मुझमें निवास करते हैं।'' यही सत्य है। अन्य सब-कुछ परिवर्तित हो सकता है, सब-कुछ बदलता रहता है। इस बाह्य जगत् के सदा परिवर्तनशील असंख्य क्षणों में एकमात्र यही एक अपरिवर्तनीय सत्य है।

इस सत्य पर मनन करें। इस सत्य की साधना करने का अभ्यास डालें और इस प्रकार अपने मनुष्य-जन्म की दुर्दशा का स्वयं ही हल खोजें। सफलता निश्चित है, क्योंकि भगवान् ने आपको अपना ही प्रतिबिम्ब जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए ही बनाया है, असफलता पाने के लिए नहीं। हमें उसने यहाँ सफल होने के लिए भेजा है, असफल होने के लिए नहीं। और यह विशेषाधिकार, यह जन्मसिद्ध अधिकार समस्त मानव-जाति को सदा के लिए समान रूप से प्राप्त है, क्योंकि सभी भगवान् के प्रतिबिम्ब हैं।

यह मनुष्य की विलक्षणता है, किन्तु यह सम्पूर्ण मानव-जाति की धरोहर है। यदि यह धरोहर आपको प्राप्त हुई है, तो इसलिए नहीं हुई कि आप ही कुछ विशेष हैं। यह आपकी विलक्षणता के कारण है, आप सदृश समस्त मानव-जाति की विलक्षणता है। आप भगवान् की दृष्टि में विलक्षण हैं, किन्तु आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि आप ही कुछ विशेष हैं; क्योंकि यदि आप विशिष्ट हैं, तो प्रत्येक व्यक्ति ही विशेष है।

अतः हमें विनम्र और सरल होना चाहिए और अकारण ही अहंकारी नहीं होना चाहिए, क्योंकि हम बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। हम उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितना कि अन्य सारा मनुष्य-वर्ग है, उससे अधिक नहीं। अतः 'विलक्षण होने' और कुछ 'विशेष रूप में महत्त्वपूर्ण होने' के बीच के सूक्ष्म अन्तर को समझना चाहिए। 'विशेष होने' में अपने में अहंकार आने का भय रहता है, जब कि विलक्षण होने अथवा बेजोड़ होने में विनम्रता आती है। इसके भीतर अहंकार निहित नहीं है।

अतः इस सत्य का अभ्यास (साधना) करना होगा कि मानवीय स्थिति के मध्य भगवान् विद्यमान हैं और वह पूर्ण रूप से विद्यमान हैं ही। इसलिए इस तथ्य को, इस सत्य को हमें अपना केन्द्र-बिन्दु बनाना है। हमें अपनी मानवीय स्थिति की अपेक्षा इसी पर अधिक बल देना चाहिए, अपने-आपमें इसी पर अत्यधिक बल देना चाहिए, अधिक मूल्य समझना चाहिए और अधिक महत्त्वपूर्ण मानना चाहिए। तब फिर सब-कुछ ठीक हो जायेगा। जब आप भगवान् को केन्द्रीय स्थान पर मानने लगते हैं, तो अन्य सब-कुछ स्वयं ही बाह्य घेरे पर आ जाता है, क्योंकि केन्द्र तो एक ही होता है।

इस प्रकार भगवान् की उपस्थिति में सदैव बने रहने की चाबी यही है। उन्हें अपने जीवन का केन्द्रीय स्थान प्रदान करें। तब अन्य सब व्यक्ति, वस्तु, पदार्थ अपने-अपने स्थान पर चले जायेंगे। भगवान् और परम श्रद्धेय गुरुदेव के आशीर्वाद हमें मन की यह सत्योन्मुखी आन्तरिक स्थिति प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करें!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

''सड़क के किनारे एकाकी, असहाय मृतप्राय पाये जाने वाले साधन विहीन रोगियों की प्रेमपूर्वक देख-रेख करने के लिए 'शिवानन्द होम' एक सेवा-केन्द्र है'' (स्वामी चिदानन्द)। स्वामी जी महाराज ने स्वयं अपने जीवन के अद्वितीय, अविभक्त, सहज एवं जीवन्त उदाहरण द्वारा इस सेवा-कार्य को प्रारम्भ किया जो कि स्वयं में एक कार्यशील प्रेम का अवर्णनीय उदाहरण है।

यह निःसन्देह सत्य है कि भगवान् अपने बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं तथा अपने भक्तों को आवश्यकतानुसार शक्ति प्रदान करते हैं। खुले आकाश के तले असहाय जीवन जीते हुए प्रकृति की कठोर एवं भयंकर प्रतारणाओं को झेलना कैसा होता है, यह हम सबने नहीं देखा है। यह प्रौढ़ महिला रोगी, जो इस माह भरती की गयी थी, के सड़क किनारे बिताये जीवन की हृदय-विदारक घटनाओं से पूर्ण एक पुस्तक लिखी जा सकती है। तारकोल की सड़क से जीर्ण-शीर्ण अवस्था में लाये जाने के समय वह केवल इतना भर याद रख पायी थी कि वह पंजाब से थी। उस समय वह सर्दी से काँपती हुई, कष्टों में सहायता करने वाले अपने सखा हनुमान् जी को पुकार रही थी। पहले ही किसी समय बाँह की हड्डी टूट जाने के कारण उसकी बाजू कन्धे से लटकती हुई झूल-सी रही थी। उसने बाद में बताया कि लोगों ने मार-मार कर उसकी हड्डी तोड़ कर यह दशा कर दी थी। पेट के नीचे के भाग में दिखायी देने वाले जले के चिह्न उसकी दुर्दशा एवं अपमान की लज्जाजनक हृदय-विदारक कथा के मूक साक्षी थे।

'होम' की सुरक्षित चारदीवारी भी भरती होने वाले ऐसे लोगों के मन में भय और शंकाएँ उत्पन्न करने वाली हो जाती है। आरम्भ के दिनों में वे भयभीत हो कर पूछते हैं, ''मैं यह कहाँ लायी गयी हूँ? क्या ये सब मुझे मारेंगे? मुझे क्या करेंगे ये?'' कई दिनों तक ये लोग रात को भयंकर सपने देखते रहेंगे और नींद खुलने पर भगवान् का शुक्र करेंगे कि 'वह भयावह समय तो कब का बीत चुका है...।'

जब कष्ट इतना गहरे तक पैठ चुका हो कि उसने किसी के व्यक्तित्व को ही मसल कर रख दिया हो, उसके स्वाभिमान का चूरा-चूरा कर दिया हो, तब क्षमा करना या भूल जाना इतना सरल नहीं होता। आदमी भले ही बोल कर न कहे, किन्तु मूक भाषा सब-कुछ कह देती है। तो भी व्यक्ति का एक भाग है जो प्रत्येक चोट और अपमान से अस्पर्शित और अप्रभावित रहता है। यही व्यक्ति का वास्तविक स्वरूप, उसकी असली पहचान है, उसके भीतर की आवाज, परमात्मा की जीवन्त विद्यमानता है।

जिन्होंने भूख को झेला है, उनसे सीखा जा सकता है कि भोजन के हरेक ग्रास के लिए हृदय के अन्तरतम से परमात्मा का धन्यवाद कैसे किया जाता है; जो निर्वस्त्र हैं, उनसे व्यक्ति सीखता है कि वस्त्र फैशन का साधन नहीं, सुरक्षा का साधन हैं, तब ही उन्हें वस्त्रों का सही मूल्य ज्ञात होता है। जो पूर्णतया एकाकी पड़ गये हैं, जिनका कोई नहीं है, उनसे भगवान् की उपस्थिति को अनुभव करना सीखा जा सकता है....

और वे वीर सिपाही, वे साहसी लोग हम लोगों से कहीं अधिक ईश्वर की सतत विद्यमानता के प्रति जागरूक हैं। इसीलिए वे प्रायः स्वयं अपने-आपसे बातें करते हैं। भीतर के सखा ही उनके एकमात्र मित्र हैं। इसीलिए शायद वे सामान्य कहे जाने वाले नियमों में बँधे हुए हम जैसे सामान्य व्यक्तियों से भिन्न ही दिखायी देते हैं। इन पंजाबी माता जी की 'होम' में चिकित्सा चल रही है, जब भी सामने मिलती हैं तो कठिनाई से हाथ उठा कर विनम्र मुस्कान से नमस्कार करती हैं। जय हनुमान्! जय महावीर!

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' ***स्वामी शिवानन्द***

सूचना

द डिवाइन लाइफ सोसायटी
आध्यात्मिक सम्मेलन, जालन्धर, पंजाब

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से ७ मई २०११ को ॐ प्रेमानन्द मन्दिर, जालन्धर, पंजाब में परम पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की ९२ वीं जन्म-जयन्ती तथा उत्तरी क्षेत्र का क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

इस सम्मेलन में डी एल एस मुख्यालय से वरिष्ठ सन्त पधार कर आशीर्वादित करेंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसारण तथा विश्व-शान्ति की स्थापना के लक्ष्य को ले कर किये जाने वाले इस सम्मेलन एवं जन्मोत्सव में सभी भक्त सादर आमन्त्रित हैं।

पंजीकरण तथा अन्य सूचनाओं के लिए सम्पर्क सूत्रह्वह्व

१. श्री वीरेन्द्र प्रताप (वीर जी) ०९८८८९९७१९२

२. श्री आर. के. चोपड़ा ०९८७८८०३६०१, ०१८१-२२५४३२२

मद्रास विश्वविद्यालय में स्वामी शिवानन्द स्मृति भाषण–स्थाई निधि

हमारी भारत माता की युवा पीढ़ी को आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान सुलभ कराने के उदात्त लक्ष्य को ले कर, द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय विभिन्न विश्वविद्यालयों में पीठ, स्थाई निधि एवं अध्ययन केन्द्र स्थापित कराने में निष्ठापूर्वक प्रयत्नशील है। इसी पावन लक्ष्य को ले कर डी एल एस मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज वर्ष २००९ के अक्तूबर माह में चेन्नै गये थे और मद्रास विश्वविद्यालय के उच्च पदाधिकारियों से श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के नाम पर दर्शन विभाग में स्थाई निधि स्थापित करने के सम्बन्ध में बातचीत की थी, तथा फरवरी २०१० में युनिवर्सिटी ऑफ़ मद्रास में 'स्वामी शिवानन्द स्मृति भाषण' के लिए स्थाई निधि स्थापित हो गयी थी।

'स्वामी शिवानन्द स्मृति स्थाई निधि' के लिए प्रथम भाषण मद्रास विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग में २३ फरवरी २०११ को आयोजित किया गया। दर्शन विभाग के अध्यक्ष डा. एस. पन्नेरसलवाम ने द डिवाइन लाइफ सोसायटी के तत्त्वावधान के सम्बन्ध में श्रोताओं को अवगत कराया तथा प्रवक्ता डा. नारायण राजा को परिचित करवाया। फिर डा. नारायण राजा, 'मदुरै युनिवर्सिटी ऑफ़ सोशियल साइंसिज' के डायरेक्टर को प्रो. वेंकटाचलम ने सम्मानित किया। डा. नारायण ने दो भाषणह्लह्लएक अँगरेजी तथा एक तमिलह्लह्लमें दिये। अँगरेजी में उन्होंने स्वामी शिवानन्द दर्शन तथा पश्चिमी दर्शन पर तुलनात्मक भाषण दिया तथा तमिल भाषण में उन्होंने स्वामी शिवानन्द के दर्शन में लोकोपकारिता के सम्बन्ध में प्रकाश डाला। भाषण की समाप्ति प्रश्नोत्तर–सत्र के साथ हुई।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, स्वामी शिवानन्द स्मृति भाषण के कार्यक्रम को इतनी सफलतापूर्वक आयोजित करने में प्रयत्नशील हुए मद्रास विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों तथा डा. नारायण राजा के सेवा–कार्य के प्रति अत्यन्त प्रशंसापूर्वक अनुग्रहीत है।

परम पिता परमात्मा तथा परम पूज्य गुरुदेव की कृपा–दृष्टि सब पर हो!

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, डी एल एस, विशाखपटनम् शाखा के अनुरोधपूर्ण आमन्त्रण पर १९ जनवरी २०११ को विशाखपटनम् शाखा में गये तथा वहाँ सत्संग में सम्मिलित हुए। श्री स्वामी जी महाराज आगामी दिन काकिनाडा गये और वहाँ शेषगिरि राव, चिदिगा, इन्द्रपालेम और श्री भार्गव, गान्धीनगर के निवास–स्थलों पर होने वाले सत्संगों में सम्मिलित हो कर उन्होंने भक्तों को आशीर्वादित किया। सन्ध्या–समय श्री स्वामी जी महाराज सभा वेदिका, रामाराव पेट में डी एल एस काकिनाडा शाखा द्वारा

आयोजित एक सार्वजनिक सत्संग में सम्मिलित हुए तथा उपस्थित जन-समूह को 'गुरुदेव द्वारा वर्णित दिव्य जीवन' विषय पर सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिया।

शान्ति आश्रम की पूज्य ज्ञानेश्वरी माता जी के निमन्त्रण पर श्री स्वामी जी महाराज स्वामी ॐकार के जन्म-महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए तोतापल्ली गये। उसके उपरान्त श्री स्वामी जी महाराज ३७ वें अखिल आन्ध्र प्रदेश डी एल एस आध्यात्मिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए वरंगल पहुँचे। २३ से २५ जनवरी २०११ तक होने वाले इस सम्मेलन का उद्घाटन स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन ध्वजारोहणम् तथा ज्योतिप्रज्वलन द्वारा किया। सम्मेलन अत्यन्त भली-भाँति आयोजित किया गया था तथा इसमें समस्त आन्ध्र प्रदेश से २००० से अधिक साधकों ने भाग लिया था। सभी तीन दिनों में श्री स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन की पूर्वापेक्षाएँ, कर्मयोग तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का दर्शन इत्यादि विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिये। श्री स्वामी जी महाराज ने शाखा के प्रतिनिधियों से भी वार्तालाप किया तथा शाखाओं को अधिक प्रभावशाली ढंग से कार्यशील होने के लिए निर्देशन भी दिये।

२७ जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज आन्ध्र प्रदेश के कडप्प जिले के एक गाँव पुल्लमपेट गये तथा वहाँ भक्तों को आशीर्वादित किया। इसके बाद श्री स्वामी जी महाराज एक छोटे पुरवा जेट्टिवरिपल्ली (कडप्प जिला) जो कि बहुदा नदी के तट पर स्थित है, गये तथा वहाँ नागेश्वर मन्दिर में होने वाले सत्संग में सम्मिलित हो कर ग्रामवासियों को आशीर्वादित किया। इसके उपरान्त स्वामी जी महाराज श्री स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल हॉस्पिटल के न्यासमण्डल की सभा में भाग लेने के लिए तमिलनाडु के पत्तमडै स्थान पर गये। फिर श्री स्वामी जी महाराज पालघाट, केरला गये जहाँ डी एल एस, पालघाट शाखा ने ब्रह्मलीन श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती जी महाराज की १०१ वीं जन्म-जयन्ती के उपलक्ष्य में भागवत सप्ताह का आयोजन किया था। श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी परम पूज्य सद्गुरुदेव द्वारा दीक्षित सन्त थे तथा उन्होंने केरला में महान् सेवा-कार्य किया था। वहाँ श्री स्वामी जी महाराज ने १ फरवरी को उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित किया। आगामी दिन श्री स्वामी जी महाराज ललित कला मन्दिर (कोयम्बतूर) गये तथा वहाँ सत्संग में भाग लिया। श्री स्वामी जी महाराज ४ फरवरी २०११ को आश्रम लौटे।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज १९ दिसम्बर २०१० तथा जनवरी २०११ में ओडिशा एवं पश्चिम बंगाल की सांस्कृतिक यात्रा पर गये। १९ दिसम्बर २०१० को श्री स्वामी जी महाराज 'स्वामी शिवानन्द सैन्टेनरी बॉयज़ हाई स्कूल, खण्डगिरी, भुवनेश्वर' गये। अध्यक्ष होने के नाते श्री स्वामी जी महाराज ने विद्यालय के विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों के सम्बन्ध में विद्यालय के पदाधिकारियों से विचार-विमर्श किया।

२० दिसम्बर को श्री स्वामी जी महाराज दशम कक्षा के उन विद्यार्थियों से मिले जिनसे बोर्ड की परीक्षा में उच्च श्रेणी प्राप्त करने की आशा थी। श्री स्वामी जी महाराज ने उन्हें निर्देशन एवं आशीर्वाद दिये। इसके साथ ही वे दशम कक्षा के अन्य सभी विद्यार्थियों से भी अलग से मिले तथा उन्हें आशीर्वाद दिया। सायंकाल को श्री स्वामी जी महाराज प्रार्थना सत्र में सम्मिलित हुए तथा सभी विद्यार्थियों को सम्बोधित किया एवं परीक्षाओं के लिए आशीर्वाद प्रदान किया।

तदुपरान्त श्री स्वामी जी महाराज बालिगुआली, पुरी में चिदानन्द शान्ति आश्रम गये तथा वहाँ के प्रभारी श्री स्वामी जितमोहानन्द जी महाराज से बातचीत की एवं आश्रम के महत्त्वपूर्ण कार्यों के विषय में भी देखा। इसके अतिरिक्त कुछेक दर्शनाभिलाषी भक्तों से भी मिले।

२३ दिसम्बर को श्री स्वामी जी महाराज ने शिवानन्द सैन्टेनरी बॉयज़ हाई स्कूल में प्रार्थना-कक्ष एवं भोजनालय के भवन-निर्माण सम्बन्धी होने वाली विचार-विमर्श सभा में भाग लिया। इस सभा में परम पूज्य गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव जी तथा ओडिशा के अन्य कई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी सम्मिलित हुए थे।

इसके उपरान्त श्री स्वामी जी महाराज ने डी एल एस सम्मेलन में भाग लेने के लिए अंगुल जिला के कानिहा की ओर प्रस्थान किया। डी एल एस दनारा शाखा ने नये सत्संग भवन का निर्माण किया था तथा उन्होंने श्री स्वामी जी महाराज से इसका उद्घाटन करने की प्रार्थना की थी। २६ दिसम्बर को श्री स्वामी जी महाराज उद्घाटन करने के लिए दनारा गये, वहाँ भवन का उद्घाटन करते हुए इसका नाम 'चिदानन्द सत्संग भवन' दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोताओं को भी श्री स्वामी जी महाराज ने सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिया।

२७ से ३० दिसम्बर तक श्री स्वामी जी महाराज एन टी पी सी (नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन), कानिहा में रहे जहाँ डी एल एस भीमकाण्ड शाखा ने छटा अखिल ओडिशा डी एल एस युवा शिविर आयोजित किया था। श्री स्वामी जी महाराज ने युवा शिविर का उद्घाटन करते हुए प्रतिभागी युवाओं को सम्बोधित किया। ४५० से अधिक युवाओं ने इस शिविर में भाग लिया था। इसके साथ ही भीमकांड शाखा द्वारा ३३ वाँ अखिल ओडिशा डी एल एस आध्यात्मिक सम्मेलन भी आयोजित किया गया था। श्री स्वामी जी महाराज इस सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर थे तथा चारों दिन श्री स्वामी जी महाराज ने इसमें भाग लिया। पूज्य गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव जी, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज (महासचिव, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय), पूज्य बाबा जी चैतन्य चरण दास जी महाराज, भागवत आश्रम पुरी, प्रज्ञान मिशन के प्रमुख परम पूज्य श्री परमहंस प्रज्ञानानन्द जी महाराज तथा अन्य बहुत से सन्त-महात्मा एवं महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे। श्री स्वामी जी महाराज ने सभी दिनों के सभी सत्रों में आशीर्वचन दिये तथा प्रातःकालीन सत्रों में ध्यान के विषय में प्रवचन दिये। इस सम्मेलन में लगभग २५० प्रतिनिधि तथा ३ से ४ हजार की संख्या में स्थानीय भक्तों ने भाग लिया।

सम्मेलन तथा युवा शिविरद्वद्वदोनों ही अत्यन्त भली-भाँति आयोजित किये गये थे तथा सभी दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट ढंग से संचालित थे। भक्त साधकों ने भी अत्यधिक शान्ति एवं ध्यानपूर्वक भाग लिया। दोनों कार्यक्रम अत्यन्त सुनियोजित ढंग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। संचालकों की समर्पण पूर्ण मूक सेवा के लिए उन्हें हार्दिक बधाई और प्रेमपूर्ण धन्यवाद!

३० दिसम्बर को एन टी पी सी के 'उच्च पदाधिकारियों के लिए नैतिक मूल्यों के महत्त्व' विषय पर वरिष्ठ पदाधिकारियों को सम्बोधित करने के लिए श्री स्वामी जी महाराज को एन टी पी सी द्वारा आमन्त्रित किया गया था, अतः श्री स्वामी जी महाराज ने उस दिन उपर्युक्त विषय पर प्रवचन दिया। इस सभा में कार्यकारी निदेशक, महाप्रबन्धक, सहायक महाप्रबन्धक, अन्य विभागाध्यक्ष, अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा एन टी पी सी यूनियन लीडर इत्यादि सभी उपस्थित थे। श्री स्वामी जी महाराज ने प्रवचन के उपरान्त श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिये। कार्यक्रम अत्यन्त रुचिपूर्ण एवं लाभकारी रहा।

अंगुल और ढेंकानाल जिलों की डी एल एस शाखाओं द्वारा स्थापित 'स्वामी शिवानन्द कल्याण समिति' ने एक 'गहम' नामक गाँव को 'स्वामी शिवानन्द सेवा ग्राम' नाम दे कर विभिन्न सेवाएँ देने के लिए चुना है। उन्होंने अभी हाल ही में 'दिव्य नाम मन्दिर' का निर्माण वहाँ पर किया है। इसके उद्घाटन के लिए उन्होंने श्री स्वामी जी महाराज से प्रार्थना की थी। ३१ दिसम्बर को श्री स्वामी जी महाराज 'स्वामी शिवानन्द सेवाग्राम, गहम' गये तथा दिव्य नाम मन्दिर का उद्घाटन किया। इस मन्दिर में स्थाई तौर पर अखण्ड महामन्त्र कीर्तन प्रारम्भ करने की योजना है। इस अवसर पर आस-पास के गाँवों से एकत्रित भारी संख्या में उपस्थित भक्त-समूह को श्री स्वामी जी महाराज ने सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिया।

सायंकाल में श्री स्वामी जी महाराज एफ सी आई टाउनशिप शाखा विक्रमपुर गये तथा वहाँ आयोजित किये गये सत्संग में 'सत्संग के महत्त्व' विषय पर प्रवचन दिया।

१ जनवरी २०११ को 'स्वामी शिवानन्द कल्याण समिति' ने एन टी पी सी के निकट मंकीडिया साही गाँव में 'उपयोगी वस्तुओं के वितरण' की योजना के अन्तर्गत श्री स्वामी जी महाराज को आमन्त्रित किया था। अतः श्री स्वामी जी महाराज वहाँ गये और ग्रामवासियों में कम्बल वितरित किये।

सत्यानन्द योग विद्यालय, भुवनेश्वर के अध्यक्ष श्री सुधांशु भूषण मिश्रा, आई ए एस (सेवा-निवृत्त), ने श्री स्वामी जी महाराज को योग विद्यालय में प्रवचन देने के लिए आमन्त्रित किया था। ५ जनवरी को स्वामी जी महाराज योग विद्यालय गये तथा वहाँ उनके अनुरोध पर 'दुःख के कारण और उनका उन्मूलन' विषय पर प्रवचन दिया। वहाँ उपस्थित महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों, उच्च प्रशासनिक पदाधिकारियों, विद्वद्जनों एवं भुवनेश्वर के भक्त-समुदाय द्वारा किये गये प्रश्नों के भी श्री स्वामी जी महाराज ने उत्तर दिये। प्रवचन अत्यन्त प्रभावोत्पादक, प्रबोधक एवं लाभदायक रहा, जिसकी सभी ने हार्दिक सराहना की।

२१ जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज ने कोलकाता, पश्चिम बंगाल के लिए प्रस्थान किया। दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल द्वारा हामिरागाछी में

२२ से २६ जनवरी तक वार्षिक साधना शिविर आयोजित किया गया था। श्री स्वामी जी महाराज ने शिविर का उद्घाटन करते हुए साधना शिविर के सभी दिनों के सभी सत्रों में भाग लिया एवं प्रवचन दिये। पश्चिम बंगाल, ओडिशा इत्यादि स्थानों से आये प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए श्री स्वामी जी महाराज ने विभिन्न सत्रों में कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग, ज्ञानयोग, दिव्य जीवन कैसे जियें, गृहस्थ आश्रम में आध्यात्मिक साधना, आध्यात्मिक जीवन में गुरु का महत्त्व इत्यादि विविध विषयों पर प्रवचन दिये। शिविर का आयोजन अत्यन्त शान्त वातावरण में किया गया था तथा यह प्रतिभागियों के लिए अत्यधिक उपयोगी एवं रुचिकर रहा। सम्पूर्ण प्रबन्ध पूरी तरह से सभी के लिए सुखकर रहा।

श्री स्वामी जी महाराज पुनः कोलकाता आ गये और वहाँ श्री जितेन्द्र गुप्ता जी के घर आयोजित सत्संग में २९ जनवरी को सम्मिलित हुए। उन्होंने उपस्थित भक्तों द्वारा किये गये प्रश्नों का समाधान भी किया।

३० जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज श्रीमती प्रभा मुखर्जी के अनुरोध पर उनके निवास-स्थान पर आयोजित 'मातृ संघ' के विशेष सत्संग में सम्मिलित हुए। यह 'मातृ संघ' १९८६ में उनके ही निवास-स्थल पर प्रारम्भ हुआ था और २५ वर्ष से सतत चल रहा है। संघ की रजत जयन्ती पर बधाई देते हुए और सत्संग की सराहना करते हुए श्री स्वामी जी महाराज ने प्रवचन तथा उसके उपरान्त महिला भक्तों के प्रश्नों के उत्तर दिये।

३१ जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज श्री सी बी सहगल के निवास-स्थान पर आयोजित सत्संग में गये तथा वहाँ भक्तों द्वारा पूछे गये साधना सम्बन्धी प्रश्नों का समाधान किया।

o

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अम्बाला (हरियाणा): शाखा द्वारा प्रत्येक रविवार को एक घण्टा महामृत्युंजय मन्त्र का सामूहिक जप, मंगलवार को श्री हनुमान चालीसा एवं अन्य स्तोत्रों का पारायण तथा सूर्यग्रहण के दिन 'ॐ नमो नारायणाय' मन्त्र का जप किया गया। सदस्यों की परस्पर भजन-गायन प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी जिसमें तीन व्यक्तियों ने पारितोषिक प्राप्त किये। निःशुल्क होमियोपैथी सेवा सदा की भाँति जारी रही।

बड़कुआँल (ओडिशा): सायंकालीन नियमित विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र एवं भजन पारायण, दिन में दो बार पूजा, साप्ताहिक गुरुपादुका पूजा, गुरुवार को सत्संग तथा प्रत्येक ८ को भी पादुका पूजा के अतिरिक्त शाखा द्वारा नवम्बर माह में ७ दिवसीय विशेष उत्सव कार्तिक पूर्णिमा तक तथा ३ चल सत्संग भी आयोजित किये गये।

बढ़ियाउस्ता (ओडिशा): नियमित रूप से रविवार को सत्संग, गुरुवार को पादुका पूजा, दैनिक प्रार्थनाएँ, पूजा, ध्यान इत्यादि तथा विभिन्न गाँवों में चल सत्संगों के साथ-साथ शाखा द्वारा २३ जनवरी को युवा शिविर राजकीय विद्यालय कालिंगी, गंजम में आयोजित किया गया जिसमें ६, ७ और ८ वीं कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इन प्रतिभागी बालकों को योगासन, प्राणायाम, आध्यात्मिक एवं नैतिक ज्ञान तथा आदर्श विद्यार्थी जीवन के सम्बन्ध में प्रशिक्षित किया गया।

बरबिल् (ओडिशा): शाखा द्वारा ५ गुरुवारों को सत्संग,

४ सोमवारों के सायंकालीन आवासीय सत्संग दिसम्बर माह में, १९ को गीता जयन्ती तथा २४ को साधना दिवस आदि आयोजित किये गये तथा ४३२ रोगियों को होमियोपैथी द्वारा सेवा प्रदान की गयी।

बारिपदा (ओडिशा): नियमित दैनिक पूजा तथा १८ दिसम्बर और १६ जनवरी के चल सत्संगों के अतिरिक्त शाखा द्वारा ३ दिसम्बर और १ जनवरी को वार्षिक दिवस के रूप में साधना दिवस मनाया गया। २० दिसम्बर एवं १२ जनवरी को विशेष सत्संग तथा कुष्ठबस्ती में दवाइयों का वितरण भी किया गया।

बल्लारि (कर्नाटक): रविवार की पादुका पूजा के अतिरिक्त शाखा द्वारा अल्पकालिक योग कक्षाएँ एवं नाड़ी चिकित्सा शिविर आयोजित किये गये। नवम्बर माह में दीपावली उत्सव एवं श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि मनायी गयी।

भिलाई नगर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा ५ दिसम्बर को नेताजी ट्रांसपोर्ट बिल्डिंग में सत्संग में पादुका पूजा, भजन-कीर्तन एवं शान्ति-पाठ किया गया। मंगलवार को मातृ सत्संग में हनुमान चालीसा, शुक्रवार को ललिता सहस्रनाम तथा अन्त में भजन-कीर्तन किया गया। दोनों एकादशी दिनों को श्री विष्णु सहस्रनाम एवं भगवद्गीता का पाठ हुआ।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा दैनिक विष्णुसहस्रनाम का सामूहिक पारायण तथा ब्रह्मलीन श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि ७ जनवरी को श्री कन्यका परमेश्वरी मन्दिर में प्रार्थनाएँ एवं गुरु पूजा सम्पन्न की गयी।

छत्रपुर (ओडिशा): जनवरी माह में शाखा द्वारा सभी गुरुवारों को साप्ताहिक सत्संग तथा १, ४, ९, १५, १६, १७, १९, २०, २१, २३, २६ एवं ३० को दैनिक सत्संगों के साथ-साथ विशेष सत्संग भी किये गये; ८ एवं २४ को विशेष पूजा-अर्चना तथा मकर संक्रान्ति को सुन्दरकाण्ड पारायण हुआ।

दिगपहांडी (ओडिशा): नियमित गतिवधियाँह्नह्नदो बार पूजा, गुरुवार एवं रविवार को सत्संग, ८ और २४ को पादुका पूजा तथा संक्रान्ति दिनों को सत्संग।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): नियमित गतिविधियों के अतिरिक्त १० जनवरी को ब्रह्मलीन श्री स्वामी सदाप्रेमानन्द जी महाराज की १८ वीं पुण्यतिथि पर प्रभातफेरी, विशेष सत्संग, हवन, भण्डारा, ३ दिवसीय अखण्ड संकीर्तन ३०० भक्तों द्वारा किया गया। मकर संक्रान्ति १४ तथा गणतन्त्र दिवस २६ जनवरी को भी विशेष सत्संग किये गये।

जगदलपुर (छत्तीसगढ़): दैनिक प्रातःकालीन प्रार्थना, ध्यान, पाठ, सत्संग तथा योगासन, सायंकालीन 'ॐ नमः शिवाय' संकीर्तन। गुरुवार को गुरु पादुका पूजा, शनिवार को हनुमान चालीसा एवं सुन्दरकाण्ड पारायण, रविवार को विष्णु सहस्रनाम पाठ। **विशेष कार्यक्रम**ह्नह्न१० जनवरी को श्री स्वामी सदाप्रेमानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि पर पादुका पूजा, अखण्ड कीर्तन; १३ को अमृत महोत्सव पर 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' का सामूहिक जप तथा ३ घण्टे की पूजा; मकर संक्रान्ति १४; तथा २६ जनवरी को ध्वजारोहण एवं राष्ट्रीय गान विद्यार्थियों द्वारा किया गया।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): नवम्बर से जनवरी तक के **नियमित कार्यक्रम**ह्नह्न(१) दैनिक प्रातः देवी भागवत कथा; (२) दैनिक सायंकालीन सत्संग में पारायण, भजन, प्रवचन एवं ध्यान; (३) रविवार को प्रातः ८ से १० बजे तक सत्संग; (४) सोमवार को सिद्धेश्वर मन्दिर में स्वामी शिवानन्द महिला सत्संग मण्डल द्वारा सत्संग; (५) होमियोपैथी क्लीनिक द्वारा ३२९७ रोगियों की चिकित्सा; (६) दैनिक योग कक्षा; (७) २८ निर्धन विधवाओं को १५० रुपये प्रति महिला की मासिक सहायता; (८) दैनिक नारायण सेवा तथा रविवार को ३०० निर्धनों की सेवा; (९) कुष्ठ रोगियों को १०५ किलो सूखा राशन मासिक वितरण; (१०) ७८०० रुपये की मासिक छात्र वृत्ति का १०५ विद्यार्थियों में वितरण तथा (११) पुस्तकालय द्वारा सेवा। **विशेष गतिविधियाँ**ह्नह्नदीपावली अन्नकूट महोत्सव, श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह, ध्यानयोग शिविर, गीता जयन्ती पर गीता माहात्म्य कथा,

प्रवचन, पारायण तथा गीता यज्ञ एवं स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज द्वारा प्रवचन शृंखला।

खातिगुडा (ओडिशा): दैनिक दो बार पूजा, गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, १५ एवं २९ जनवरी के एकादशी सत्संगों में विष्णु सहस्रनाम पारायण, २३ को चल सत्संग, २ को साधना दिवस में १२ घण्टे का अखण्ड महामन्त्र जप तथा नारायण सेवा की गयी।

लइदाम (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा ८ से १८ दिसम्बर तक श्री सीताराम महायज्ञ श्री सीताराम पुष्करिणी में किया गया जिसमें श्री माता ज्योतिर्मयानन्द, श्री स्वामी समतानन्द एवं श्री भास्कर भाटला श्री राममूर्ति द्वारा प्रवचन हुए। सहस्रों भक्तों द्वारा तेप्पोत्सवम् मनाया गया जिसमें वैदिक मन्त्रोच्चारण, महामन्त्र संकीर्तन, विष्णुसहस्रनाम पारायण तथा हनुमान चालीसा एवं रामायण पाठ किया गया।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): दिसम्बर और जनवरी माह में शाखा द्वारा दैनिक ब्राह्ममुहूर्त सत्संग ४.३० से ६.३० तक, सायंकालीन सत्संग ६.३० से ७.३० तक; ३ तारीख को ६ घण्टे का अखण्ड महामन्त्र कीर्तन, गुरुवार को चल सत्संग, शनिवार को मातृ सत्संग, एकादशियों के गीता पाठ एवं विष्णु सहस्रनाम पारायण नियमित रूप से चलते रहे। **विशेष गतिविधियाँ**ह्वह्व(१) १९ दिसम्बर गीता जयन्ती को सम्पूर्ण श्लोकों सहित गीता पारायण। (२) विशेष आवासीय युवा शिविर, जिसमें ३५ प्रतिनिधि अहिवारा, भिलाई एवं नन्दिनी नगर आदि से आये। (३) डी एल एस शाखा के पदाधिकारी ११ और १२ को योग शिविर में भाग लेने महासमुंद गये तथा १७ को शाखा उद्घाटन समारोह में रायपुर गये। (४) **अमृत महोत्सव कार्यक्रम**ह्वह्व१. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं के ३३ विद्यार्थियों का 'भ्रष्टाचार' विषय पर वाद-विवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रत्येक समूह के ३-३ विद्यार्थीह्वह्वकुल १२ विजेता विद्यार्थियों को नकद (१०३९ रुपये) प्रमाण-पत्र मुख्य अतिथि श्री डी. एन. स्वामी, उप जनरल मैनेजर (Flux), भिलाई स्टील प्लांट द्वारा गणतन्त्र दिवस पर दिये गये। २. अन्तर विद्यालय योगासन प्रतियोगिताह्वह्व५७ विद्यार्थी प्रतिभागियों में से ९ विजेताओं को (५३७ रुपये) नकद एवं प्रमाण-पत्र गणतन्त्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि पद्मा स्वामी द्वारा दिये गये। (५) १७ से २१ जनवरी तक स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के निर्देशन में विद्यार्थियों के लिए योगासन प्रशिक्षण शिविर। (६) निष्क्रिय शाखाओं को पुनरुज्जीवित करने के उद्देश्य से दुर्ग राजनन्दगाओं में विशेष सत्संग तथा रामनगर, भिलाई शिविर में ४ सत्संग आयोजित किये गये।

नयागढ़ (ओडिशा): नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संग, सुन्दरकाण्ड पाठ एवं चिदानन्द अन्नक्षेत्र द्वारा नारायण सेवा के अतिरिक्त शाखा द्वारा दशहरा दिनों में श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द सरस्वती द्वारा 'श्रीराम चरित मानस' पर ९ दिवसीय प्रवचन; १४ नवम्बर को साधना दिवस; १९ दिसम्बर को गीता जयन्ती; १३ जनवरी अमृत महोत्सव को पादुका पूजा, ध्यान, सत्संग, छपा हुआ साहित्य वितरण तथा नारायण सेवा में बेबारतपल्ली गाँव के अग्निकाण्ड से आहत ४० निराश्रित निर्धनों के लिए सेवा का आयोजन किया गया।

फूलबानी (ओडिशा): दिन में दो बार पूजा, रविवार को साप्ताहिक सत्संग, ८ और २४ को पादुका पूजन इत्यादि नियमित रूप से होने वाले कार्यक्रमों के अतिरिक्त शाखा द्वारा १९ दिसम्बर गीता जयन्ती को गीता के प्रत्येक श्लोक के साथ आहुतियाँ डालते हुए यज्ञ तथा १५० भक्त-जनों में अन्नदान वितरित किया गया।

शंकरनगर, रायपुर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा सोमवार को हनुमान मन्दिर में महिला सत्संग तथा गुरुवार को भक्तों के निवास-स्थानों पर सत्संग हुए। जगदलपुर, ओडिशा के आदिवासी इलाकों में तथा मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में गर्म कपड़ों का वितरण भी किया गया।

सिक्किम : १३ जनवरी को डिवाइन लाइफ सोसायटी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में शाखा द्वारा विशेष सत्संग, २० जनवरी एवं ३ फरवरी को सत्संग। शाखा के सचिव श्री मनोरथ दहल द्वारा १२ से १७ दिसम्बर तक २५ विद्यार्थियों को २ घण्टे प्रतिदिन योगासन प्रशिक्षण दिया गया।

साउथ बलण्डा (ओडिशा): दो बार दैनिक पूजन, शुक्रवार साप्ताहिक सत्संग, बालकों के लिए 'चिदानन्द बाल

विकास'; ८, २४ को गुरु पाद पूजा एवं विशेष सत्संगों जैसे नियमित कार्यक्रमों के अतिरिक्त शाखा द्वारा १४ जनवरी मकर संक्रान्ति को प्रातः गुरु पादुका पूजा तथा विश्व-शान्ति एवं भ्रातृ-भावना हेतु ३ घण्टे का 'महामृत्युंजय मन्त्र जप' तथा ३ घण्टे का 'महामन्त्र संकीर्तन' किया गया। **विशेष गतिविधियाँ**ह्न(१) ५ दिसम्बर को श्री ए. नागेश्वर राव के घर सत्संग, (२) १९ दिसम्बर, गीता जयन्ती को पादुका पूजा, पारायण एवं प्रवचन, (३) अमृत महोत्सव के अंग के रूप में २ जनवरी को साधना दिवस जिसमें श्री स्वामी शिवानन्द बोधानन्द जी, स्वामी रामकृपानन्द जी तथा अन्यों ने दिव्य जीवन संघ तथा भगवद् गीता विषयों पर ३०० प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। (४) ३१ जनवरी को श्री निवास पाढी, शाखा के उपाध्यक्ष के निवास पर सत्संग किया।

स्टील टाउनशिप, राउरकेला (ओडिशा): शाखा द्वारा भक्तों के आवासीय स्थान पर एक विशेष सत्संग तथा दो साधना दिवस; १९ नवम्बर, गीता जयन्ती पर श्री गोपाल सहस्रनाम अर्चना, गुरु पादुका पूजन, गीता यज्ञ, नारायण सेवा तथा श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी महाराज द्वारा प्रबोधनपूर्ण प्रवचनह्नगुरु महाराज के जीवन एवं शिक्षाओं पर दिये गये।

सुनाबेडा (ओडिशा): प्रत्येक गुरुवार एवं शनिवार को साप्ताहिक सत्संग सायंकाल ७ से ८.३० तक, जिसमें भजन एवं स्वाध्याय, मन्त्रदीक्षा दिनों पर गुरु पादुका पूजन एवं हवन सहित विशेष सत्संग। महिला शाखा द्वारा प्रत्येक बुधवार एवं शनिवार को सत्संग; १९, २० दिसम्बर को श्री स्वामी मोक्षप्रियानन्द जी महाराज (मुख्यालय) द्वारा विशेष सत्संग हुए।

तस्कर टाउन, बेंगुलूरु (कर्नाटक): गीता जयन्ती, दत्तात्रेय जयन्ती तथा हनुमान जयन्ती को विशेष सत्संग में गुरु पादुका पूजा, भगवद् गीता पारायण तथा स्वाध्याय किया गया। सभी शुक्रवारों को देवी पूजन, ललिता सहस्रनाम तथा विष्णु सहस्रनाम पारायण, ५ को श्री ओदुगत्तूर स्वामिगल के साथ विशेष सत्संग तथा १९ को अखण्ड कीर्तन, डी एल एस के अमृत महोत्सव तथा शाखा का ६६ वाँ वार्षिक दिवस १३ से १९ जनवरी तक जिसमें गानकलाभूषण श्री आर. के. पद्मनाभन द्वारा ज्ञान यज्ञ में पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

ट्रिप्लीकेन, चेन्नै (तमिल नाडु): शाखा द्वारा दिव्य जीवन संघ के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में २ को अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन, ८ को गुरु पादुका पूजा एवं निर्धन लोगों में अन्नदान वितरण तथा तिरुवरूर के चतुर्दिक् एवं भीतर का तीर्थाटन तथा श्री सप्तविडंग लिंग दर्शन किया गया।

उस्मानपुरा (गुजरात): शाखा द्वारा नित्य प्रातः योग कक्षा संचालन तथा उसके उपरान्त आधा घण्टा जप यज्ञ। २ जनवरी को गुरु पादुका पूजा की गयी।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): ५ दिसम्बर को भक्त समूह द्वारा गंगा पार के प्राचीन दुर्गा मन्दिर में सत्संग; ९, २३ जनवरी को स्तोत्र, भजन एवं स्वाध्याय सहित 'वृद्धाश्रम' में सत्संग। शाखा द्वारा १३ वर्षीय दीपक के पिता श्री लालजी माली, जो कि बी. एच. यू. चिकित्सालय में 'एप्लास्टिक-एनीमिया' की चिकित्सा के लिए भरती है, को ५०००/- धनराशि की सहायता तथा शिवाला घाट, वाराणसी स्थित 'मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी' के अन्तेवासियों को ५००/- की सहायता दी गयी।

विक्रमपुर (ओडिशा): दिन में दो बार पूजा, बुधवार को साप्ताहिक सत्संग तथा प्रत्येक ८ एवं विशेष दिनों पर गुरु पादुका पूजा के अतिरिक्त शाखा द्वारा ७ नवम्बर को गोपाल सहस्रनाम जप, अर्चना सहित; १४ नवम्बर को भगवद् गीता पारायण, गोपाल सहस्रनाम सहित; तथा १७ नवम्बर को सामूहिक 'महामृत्युंजय जप' किया गया। ३१ दिसम्बर को आश्रम मुख्यालय से परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज द्वारा बड़ी संख्या में उपस्थित जन-समूह को विशेष साधना दिवस तथा सत्संग प्रदान किया गया।

विशाखपटनम् (आन्ध्र प्रदेश): जनवरी मास में योग कक्षाओं, साप्ताहिक सत्संग तथा निःशुल्क डाक्टरी जाँच इत्यादि नियमित गतिविधियों के अतिरिक्त १९ को मुख्यालय आश्रम से परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज का आगमन विशेष घटना थी। श्री स्वामी जी महाराज ने निर्माणाधीन श्री विश्वनाथ मन्दिर के भवन को देखा तथा २०० से अधिक उपस्थित भक्त-समुदाय को सम्बोधित करते हुए विशेष सत्संग किया।